International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

# सतत विकास की चुनौतियों के समाधान में गांधीवादी सर्वोदय की प्रासंगिकता

**हरिभाऊ ज्ञानेश्वर सोनुने,**
संशोधक, गांधी अध्ययन विभाग, एम. जी. एम. विश्वविद्यालय, छत्रपती संभाजीनगर
**डॉ. जॉन चेल्लादुराई,**
संशोधन मार्गदर्शक, गांधी अध्ययन विभाग प्रमुख, एम. जी. एम. विश्वविद्यालय, छत्रपती संभाजीनगर

**सारांश**
इक्कीसवीं शताब्दी में मानव सभ्यता ने अभूतपूर्व वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति हासिल की है, फिर भी वह जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापमान वृद्धि, पर्यावरण प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन, आर्थिक विषमता, बेरोजगारी, सामाजिक असमानता तथा नैतिक मूल्यों के ह्रास जैसी गंभीर चुनौतियों से जूझ रही है। आर्थिक वृद्धि को केंद्र में रखने वाले पारंपरिक विकास मॉडल ने उत्पादन और उपभोग को बढ़ाया है, किन्तु मानव और प्रकृति के मध्य संतुलन स्थापित करने में सफलता नहीं पाई है। इसी संदर्भ में सतत विकास की अवधारणा विश्व समुदाय के समक्ष एक वैकल्पिक विकास प्रतिमान के रूप में उभरी है, जिसका उद्देश्य वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के अधिकारों की रक्षा करना है। महात्मा गांधी का सर्वोदय दर्शन ठीक इसी प्रकार के संतुलित, नैतिक और मानव-केंद्रित विकास की वकालत करता है। सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, ग्राम स्वराज, ट्रस्टीशिप, आत्मनिर्भरता, सीमित उपभोग और सर्वजन हित इसके मूल स्तंभ हैं। गांधीजी का विश्वास था कि विकास तभी सार्थक है जब उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाए रखते हुए मानव कल्याण सुनिश्चित हो। गांधीवादी सर्वोदय दर्शन आधुनिक सतत विकास के आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय तीनों आयामों के साथ गहरा सामंजस्य रखता है। प्रस्तुत शोध आलेख सतत विकास की अवधारणा, उसकी समकालीन चुनौतियों तथा गांधीवादी सर्वोदय की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। यह स्पष्ट करता है कि वर्तमान वैश्विक संकटों के समाधान के लिए केवल तकनीकी उपाय पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि नैतिक, मानवीय और मूल्य-आधारित विकास दृष्टिकोण भी अपरिहार्य है। गांधीवादी सर्वोदय आज भी सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण, आर्थिक समानता और समावेशी विकास के लिए एक प्रासंगिक एवं प्रभावी वैचारिक आधार प्रदान करता है।

**बीज शब्द :** सतत विकास, गांधीवाद, सर्वोदय, ग्राम स्वराज, ट्रस्टीशिप, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय, स्वदेशी, सतत विकास लक्ष्य।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

**प्रस्तावना**

वर्तमान युग विश्व को तीव्र आर्थिक विकास, वैज्ञानिक उपलब्धियों और तकनीकी नवाचारों की अभूतपूर्व प्रगति का साक्षी बना रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल अर्थव्यवस्था, औद्योगिक विस्तार और वैश्विक व्यापार ने मानव जीवन को अत्यधिक सुविधाजनक बनाया है। किन्तु इसी विकास मॉडल ने अनेक गंभीर समस्याओं को भी जन्म दिया है। जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापवृद्धि, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, जैव-विविधता का ह्रास, वनों की कटाई, जल संकट, प्रदूषण, बेरोजगारी, आर्थिक असमानता और सामाजिक विषमता जैसी चुनौतियाँ आज विश्व समुदाय के समक्ष प्रमुख संकट बनकर उभरी हैं। इन परिस्थितियों में यह प्रश्न अत्यंत प्रासंगिक हो गया है कि क्या वर्तमान विकास मॉडल वास्तव में मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रहा है अथवा वह भविष्य की पीढ़ियों के अस्तित्व को संकट में डाल रहा है। इसी संदर्भ में सतत विकास (Sustainable Development) की अवधारणा ने वैश्विक महत्व प्राप्त किया है। सतत विकास का मूल उद्देश्य केवल आर्थिक वृद्धि नहीं, बल्कि आर्थिक प्रगति के साथ-साथ सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण और मानवीय गरिमा की रक्षा भी है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित सतत विकास लक्ष्य (SDGs) इसी समग्र दृष्टिकोण को साकार करने का प्रयास हैं, जिनमें गरीबी उन्मूलन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, स्वच्छ ऊर्जा, जल संरक्षण, सतत उत्पादन-उपभोग और जलवायु परिवर्तन की रोकथाम जैसे क्षेत्र शामिल हैं। यद्यपि सतत विकास की अवधारणा आधुनिक वैश्विक विमर्श का केंद्र है, तथापि इसके मूल तत्व भारतीय चिंतन परंपरा में प्राचीन काल से ही विद्यमान रहे हैं। विशेष रूप से महात्मा गांधी के विचारों में मानव, समाज और प्रकृति के मध्य संतुलित संबंध की स्थापना पर विशेष बल दिया गया है। गांधीजी ने विकास को मात्र उत्पादन या उपभोग की वृद्धि के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे नैतिकता, आत्मसंयम, सामाजिक समानता और पर्यावरणीय संतुलन से जोड़कर परिभाषित किया। उनका प्रसिद्ध कथन "पृथ्वी प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है, किन्तु किसी एक व्यक्ति के लालच की नहीं" आज भी सतत विकास का आधारभूत सिद्धांत माना जाता है।

गांधीजी द्वारा प्रतिपादित सर्वोदय दर्शन का शाब्दिक अर्थ है 'सभी का उदय' अथवा 'सभी का कल्याण'। यह केवल सामाजिक सुधार का सिद्धांत नहीं, बल्कि एक समग्र विकास दर्शन है जिसमें व्यक्ति, समाज और प्रकृति का संतुलित विकास समाहित है। सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, ग्राम स्वराज, ट्रस्टीशिप, विकेंद्रीकरण, आत्मनिर्भरता और सीमित उपभोग जैसे सिद्धांतों के माध्यम से यह न्यायपूर्ण एवं टिकाऊ समाज की स्थापना का मार्ग प्रस्तुत करता है। सर्वोदय का केन्द्रीय लक्ष्य समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान के जरिए समावेशी विकास सुनिश्चित करना है। आज जब विश्व उपभोक्तावाद, संसाधनों के अंधाधुंध दोहन और सामाजिक असमानता से जूझ रहा है, तब गांधीवादी सर्वोदय का पुनर्पाठ अत्यंत आवश्यक है। यह आधुनिक सतत विकास को केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं, बल्कि नैतिक एवं मानवीय दृष्टिकोण से भी समृद्ध बनाता है। प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य सतत विकास के समक्ष विद्यमान प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

करना तथा गांधीवादी सर्वोदय के माध्यम से उनके समाधान की संभावनाओं का अध्ययन करना है। यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि गांधीजी के विचार केवल ऐतिहासिक या दार्शनिक महत्व तक सीमित नहीं हैं, अपितु वे वर्तमान वैश्विक संकटों के समाधान के लिए भी पूर्णतः प्रासंगिक हैं। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि विकास प्रक्रिया को मानवीय मूल्यों, सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय संतुलन और नैतिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़ने पर सतत एवं समावेशी विकास की दिशा में सार्थक प्रगति संभव है।

**शोध विषय के उद्देश्य**

1. सतत विकास की अवधारणा तथा उसके समक्ष उपस्थित प्रमुख वैश्विक एवं राष्ट्रीय चुनौतियों का अध्ययन करना।
2. महात्मा गांधी के सर्वोदय दर्शन के मूल सिद्धांतों, सत्य, अहिंसा, ग्राम स्वराज, स्वदेशी, ट्रस्टीशिप, आत्मनिर्भरता एवं सर्वजन कल्याण का विश्लेषण करना।
3. सतत विकास की सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान में गांधीवादी सर्वोदय की भूमिका एवं प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।
4. संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के संदर्भ में गांधीवादी सर्वोदय दर्शन की समकालीन उपयोगिता का अध्ययन करते हुए सतत एवं समावेशी विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

**शोध का महत्त्व**

वर्तमान समय में विश्व तीव्र औद्योगिकीकरण, वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के साथ-साथ अनेक गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, आर्थिक असमानता, सामाजिक विषमता, बेरोजगारी तथा नैतिक मूल्यों का ह्रास सतत विकास की राह में प्रमुख बाधाएँ बन चुके हैं। इन परिस्थितियों में केवल आर्थिक वृद्धि पर्याप्त नहीं है, बल्कि ऐसा विकास अपेक्षित है जो सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय संतुलन और मानवीय मूल्यों को समान रूप से महत्व दे।

इसी कारण सतत विकास की अवधारणा वैश्विक स्तर पर अत्यधिक प्रासंगिक हो गई है। महात्मा गांधी का सर्वोदय दर्शन इन समकालीन चुनौतियों के समाधान हेतु एक समग्र एवं मूल्य-आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। सर्वोदय सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, ग्राम स्वराज, ट्रस्टीशिप, आत्मनिर्भरता, सीमित उपभोग तथा सर्वजन कल्याण जैसे सिद्धांतों पर आधारित है। गांधीजी ने विकास को केवल आर्थिक उन्नति के रूप में नहीं, अपितु व्यक्ति, समाज और प्रकृति के संतुलित विकास के रूप में देखा। उनके विचार आज भी पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता, आर्थिक समानता और न्यायपूर्ण विकास के लिए पूर्णतः प्रासंगिक हैं।

यह अध्ययन इसलिए विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह गांधीवादी सर्वोदय दर्शन को आधुनिक सतत विकास के संदर्भ में पुनः व्याख्यायित करता है। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) और गांधीजी

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

के सर्वोदय सिद्धांतों के मध्य गहरे वैचारिक संबंधों को उजागर करते हुए यह शोध समकालीन विकास विमर्श को भारतीय दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों, शोधार्थियों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। साथ ही, यह सतत, समावेशी, नैतिक एवं मानव-केंद्रित विकास की दिशा में गांधीवादी विचारधारा की व्यवहारिक प्रासंगिकता एवं उपयोगिता को स्थापित करने का प्रयास करता है।

**शोध पद्धति**

प्रस्तुत शोध गुणात्मक (Qualitative) एवं वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक (Descriptive-Analytical) प्रकृति का है। अध्ययन में मुख्यतः द्वितीयक (Secondary) स्रोतों का उपयोग किया गया है। शोध सामग्री का संकलन महात्मा गांधी के मूल ग्रंथों, Collected Works of Mahatma Gandhi, Hind Swaraj, विनोबा भावे एवं जे. सी. कुमारप्पा के साहित्य, संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रकाशित सतत विकास लक्ष्य (SDGs) संबंधी प्रतिवेदनों, नीति आयोग की रिपोर्टों, शोध पत्रों, पुस्तकों, शोध प्रबंधों तथा विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की प्रकाशित रिपोर्टों से किया गया है।

संकलित सामग्री का विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis), तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis) तथा व्याख्यात्मक पद्धति (Interpretative Method) के माध्यम से अध्ययन किया गया है। शोध में सतत विकास की अवधारणा, उसकी प्रमुख चुनौतियों तथा गांधीवादी सर्वोदय के सिद्धांतों के मध्य अंतर्संबंधों का विश्लेषण करते हुए उनकी समकालीन प्रासंगिकता का मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य सांख्यिकीय परीक्षण करना नहीं, बल्कि उपलब्ध साहित्य के आधार पर गांधीवादी सर्वोदय को सतत विकास की चुनौतियों के समाधान हेतु एक वैचारिक एवं व्यवहारिक विकास मॉडल के रूप में प्रस्तुत करना है। इस प्रकार यह शोध सिद्धांत-आधारित विश्लेषणात्मक अध्ययन (Theory-based Analytical Study) के रूप में संपादित किया गया है।

**शोध विवेचन एवं चर्चा**

- **सतत विकास की अवधारणा एवं चुनौतियाँ**

सतत विकास (Sustainable Development) वर्तमान समय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विकास अवधारणाओं में से एक है। इसका व्यापक अर्थ ऐसा विकास है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति इस प्रकार करे कि भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं एवं संसाधनों पर कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। यह अवधारणा केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक समानता, पर्यावरण संरक्षण तथा नैतिक उत्तरदायित्व को भी समान महत्व प्रदान करती है।

सन् 1987 में ब्रुंटलैंड आयोग (Brundtland Commission) द्वारा प्रकाशित Our Common Future रिपोर्ट में सतत विकास की सर्वाधिक स्वीकार्य परिभाषा प्रस्तुत की गई। इसके अनुसार सतत विकास वह विकास है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

को पूरा करने की क्षमता से समझौता नहीं करता। इस परिभाषा ने विकास को आर्थिक वृद्धि के संकीर्ण दायरे से निकालकर सामाजिक एवं पर्यावरणीय संतुलन के व्यापक दृष्टिकोण से जोड़ दिया। सतत विकास के तीन प्रमुख आधार स्तंभ माने जाते हैं, आर्थिक सततता, सामाजिक सततता तथा पर्यावरणीय सततता। आर्थिक सततता का आशय ऐसी अर्थव्यवस्था से है जो दीर्घकाल तक रोजगार, उत्पादन तथा आय के अवसर प्रदान कर सके। सामाजिक सततता का उद्देश्य समान अवसर, सामाजिक न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा मानव गरिमा सुनिश्चित करना है। पर्यावरणीय सततता प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, जैव विविधता की रक्षा तथा प्रदूषण नियंत्रण पर बल देती है। इन तीनों स्तंभों के मध्य संतुलन स्थापित किए बिना सतत विकास की कल्पना अधूरी मानी जाती है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में सतत विकास अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। जलवायु परिवर्तन, बढ़ता कार्बन उत्सर्जन, वनों की कटाई, जल संकट, भूमि क्षरण तथा जैव विविधता का निरंतर ह्रास पृथ्वी के पारिस्थितिक संतुलन को प्रभावित कर रहे हैं। दूसरी ओर आर्थिक असमानता, बेरोजगारी, गरीबी, खाद्य असुरक्षा तथा सामाजिक विषमता विकास प्रक्रिया को असंतुलित बना रही हैं। वैश्वीकरण एवं उपभोक्तावादी संस्कृति ने उत्पादन और उपभोग के ऐसे प्रतिमान विकसित किए हैं जिनके कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हो रहा है। परिणामस्वरूप वर्तमान विकास मॉडल पर्यावरणीय दृष्टि से अस्थिर तथा सामाजिक दृष्टि से असमान सिद्ध हो रहा है।

इसके अतिरिक्त आधुनिक विकास मॉडल में नैतिक मूल्यों का अभाव भी एक गंभीर चुनौती है। प्रतिस्पर्धा, लाभ अधिकतमकरण तथा उपभोग-केंद्रित जीवनशैली ने मानव और प्रकृति के मध्य संतुलन को कमजोर किया है। ऐसी परिस्थितियों में केवल वैज्ञानिक एवं तकनीकी समाधान पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि विकास प्रक्रिया में नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, आत्मसंयम तथा मानवीय मूल्यों का समावेश भी आवश्यक है। यही वह बिंदु है जहाँ गांधीवादी सर्वोदय दर्शन सतत विकास को एक वैकल्पिक और मूल्याधारित दिशा प्रदान करता है।

- **गांधीवादी सर्वोदय की अवधारणा**

महात्मा गांधी का सर्वोदय दर्शन भारतीय चिंतन परंपरा का एक व्यापक, समग्र एवं मानवतावादी विकास दर्शन है। 'सर्वोदय' शब्द संस्कृत के 'सर्व' तथा 'उदय' शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है, सभी का उदय, सभी का विकास अथवा सभी का कल्याण। गांधीजी ने इस अवधारणा को अंग्रेज़ विचारक जॉन रस्किन की पुस्तक Unto This Last से प्रेरणा लेकर भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुरूप विकसित किया। सर्वोदय का मूल उद्देश्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति विशेषकर अंतिम, वंचित एवं शोषित व्यक्ति का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करना है। यह केवल आर्थिक समानता का सिद्धांत नहीं है, बल्कि सत्य, अहिंसा, प्रेम, सेवा, नैतिकता तथा आत्मनिर्भरता पर आधारित एक समग्र जीवन-दर्शन है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

गांधीजी के अनुसार किसी भी समाज की वास्तविक प्रगति का मूल्यांकन उसके सबसे समृद्ध व्यक्ति से नहीं, बल्कि सबसे कमजोर एवं वंचित व्यक्ति की स्थिति से किया जाना चाहिए। यही विचार आगे चलकर 'अंत्योदय' के रूप में विकसित हुआ, जो सर्वोदय का आधार है। सर्वोदय का लक्ष्य ऐसा समाज स्थापित करना है जिसमें किसी भी प्रकार का शोषण, भेदभाव, हिंसा अथवा असमानता न हो तथा प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर प्राप्त हो। सर्वोदय दर्शन में व्यक्ति, समाज एवं प्रकृति को एक-दूसरे का पूरक माना गया है। गांधीजी के अनुसार यदि विकास केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित रह जाए और उसमें नैतिकता, सामाजिक न्याय तथा पर्यावरणीय संतुलन का अभाव हो, तो वह वास्तविक विकास नहीं कहलाएगा। इसलिए सर्वोदय आधुनिक सतत विकास के लिए एक नैतिक एवं मानवीय आधार प्रदान करता है।

**सतत विकास की चुनौतियों के समाधान में गांधीवादी सर्वोदय की भूमिका**

- **पर्यावरण संरक्षण एवं प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग**

वर्तमान समय में पर्यावरणीय संकट सम्पूर्ण विश्व के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन चुका है। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, जैव विविधता का ह्रास, प्रदूषण तथा प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन पृथ्वी के अस्तित्व को संकट में डाल रहे हैं। आधुनिक औद्योगिकीकरण एवं उपभोक्तावादी संस्कृति ने उत्पादन एवं उपभोग की ऐसी प्रवृत्ति विकसित की है, जिसके कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हो रहा है। महात्मा गांधी ने लगभग एक शताब्दी पूर्व ही इस संकट की आशंका व्यक्त करते हुए स्पष्ट किया था कि पृथ्वी प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है, किन्तु किसी एक व्यक्ति के लालच की नहीं। गांधीजी का यह विचार आज पर्यावरणीय नैतिकता का मूल सिद्धांत माना जाता है। गांधीवादी सर्वोदय प्रकृति को केवल संसाधन नहीं बल्कि जीवन का आधार मानता है। इसमें सीमित उपभोग, सादगीपूर्ण जीवन, स्थानीय संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, पुनर्चक्रण, जैविक कृषि तथा पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली पर विशेष बल दिया गया है। यदि समाज गांधीजी के इन सिद्धांतों को अपनाए तो कार्बन उत्सर्जन, प्रदूषण तथा प्राकृतिक संसाधनों के अनावश्यक दोहन में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकती है।

- **सामाजिक न्याय एवं समावेशी विकास**

सतत विकास का एक प्रमुख उद्देश्य ऐसा समाज निर्मित करना है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर प्राप्त हों। वर्तमान समय में आर्थिक असमानता, बेरोजगारी, जातीय भेदभाव, लैंगिक विषमता तथा सामाजिक बहिष्करण विकास की प्रमुख चुनौतियाँ हैं। गांधीजी का सर्वोदय दर्शन सामाजिक न्याय को विकास का आधार मानता है। उनके अनुसार विकास तभी सार्थक है जब उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। उन्होंने अस्पृश्यता, जातिगत भेदभाव, आर्थिक विषमता तथा सामाजिक अन्याय का निरंतर विरोध किया। सर्वोदय का सिद्धांत समावेशी विकास की अवधारणा को मजबूत करता है क्योंकि इसमें प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा, समान अवसर, शिक्षा, स्वास्थ्य, सम्मान तथा सामाजिक सहभागिता को

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

समान महत्व दिया गया है। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों में "Leaving No One Behind" अर्थात "किसी को भी पीछे न छोड़ना" का सिद्धांत गांधीजी के अंत्योदय दर्शन से अत्यंत निकटता रखता है।

- **ट्रस्टीशिप सिद्धांत एवं आर्थिक समानता**

वर्तमान वैश्विक अर्थव्यवस्था में आय एवं संपत्ति की असमानता निरंतर बढ़ती जा रही है। सीमित व्यक्तियों के हाथों में धन एवं संसाधनों का केंद्रीकरण सामाजिक असंतोष तथा आर्थिक विषमता को बढ़ावा देता है। गांधीजी ने इस समस्या के समाधान के लिए ट्रस्टीशिप सिद्धांत प्रस्तुत किया। उनके अनुसार धनवान व्यक्ति अपनी संपत्ति का स्वामी नहीं बल्कि समाज का न्यासी (Trustee) है। उसकी अतिरिक्त संपत्ति समाज के कल्याण हेतु उपयोग में लाई जानी चाहिए। ट्रस्टीशिप का उद्देश्य हिंसक आर्थिक क्रांति के स्थान पर नैतिक आर्थिक परिवर्तन लाना है। यह पूँजी और श्रम के मध्य सहयोग, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा न्यायपूर्ण वितरण की अवधारणा को प्रोत्साहित करता है। वर्तमान समय में कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR), सामाजिक उद्यमिता तथा उत्तरदायी व्यवसाय (Responsible Business) की अवधारणाएँ गांधीजी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत की समकालीन अभिव्यक्तियाँ मानी जा सकती हैं।

- **ग्राम स्वराज एवं विकेंद्रीकरण**

सतत विकास की सफलता स्थानीय स्तर पर जनसहभागिता पर निर्भर करती है। गांधीजी ने ग्राम स्वराज को राष्ट्र निर्माण का आधार माना। उनके अनुसार प्रत्येक गाँव आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होना चाहिए। ग्राम स्वराज का उद्देश्य स्थानीय संसाधनों का स्थानीय स्तर पर उपयोग, स्थानीय रोजगार, सामुदायिक निर्णय, पंचायती व्यवस्था तथा विकेंद्रीकृत शासन को बढ़ावा देना है। आज संयुक्त राष्ट्र तथा विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ स्थानीय शासन (Local Governance), सामुदायिक भागीदारी तथा विकेंद्रीकृत विकास को सतत विकास का महत्वपूर्ण आधार मानती हैं। भारत में पंचायती राज व्यवस्था भी गांधीजी के ग्राम स्वराज की भावना को व्यवहारिक रूप प्रदान करती है।

- **स्वदेशी एवं आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था**

वैश्वीकरण के कारण स्थानीय उद्योगों तथा पारंपरिक उत्पादन प्रणालियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। बड़े उद्योगों पर अत्यधिक निर्भरता से बेरोजगारी, संसाधनों का केंद्रीकरण तथा पर्यावरणीय संकट बढ़े हैं।
गांधीजी का स्वदेशी सिद्धांत स्थानीय उत्पादन, स्थानीय रोजगार तथा स्थानीय उपभोग पर आधारित है। उनका विश्वास था कि आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था ही दीर्घकालीन एवं सतत विकास का आधार बन सकती है। आज "आत्मनिर्भर भारत", "वोकल फॉर लोकल", स्थानीय कृषि, हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग तथा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों (MSMEs) को बढ़ावा देने की नीतियाँ गांधीजी के स्वदेशी दर्शन की समकालीन अभिव्यक्ति हैं।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

- **नैतिक उपभोग एवं सादगीपूर्ण जीवनशैली**

आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति सतत विकास के समक्ष सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। अनावश्यक उपभोग, संसाधनों की बर्बादी तथा विलासितापूर्ण जीवनशैली पर्यावरणीय असंतुलन को बढ़ावा देती है। गांधीजी ने संयम, सादगी एवं आवश्यकतानुसार उपभोग को जीवन का आदर्श माना। उनके अनुसार वास्तविक समृद्धि वस्तुओं के अधिक संग्रह में नहीं, बल्कि संतुलित एवं संतोषपूर्ण जीवन में निहित है। आज "Responsible Consumption", "Circular Economy", "Minimalism", "Green Lifestyle" जैसी अवधारणाएँ गांधीजी के इसी विचार का आधुनिक स्वरूप हैं।

- **शिक्षा, नैतिकता एवं मानवीय मूल्य**

सतत विकास केवल आर्थिक कार्यक्रमों से संभव नहीं है; इसके लिए मूल्यपरक शिक्षा एवं नैतिक नागरिकों का निर्माण भी आवश्यक है। गांधीजी की 'नई तालीम' शिक्षा को श्रम, नैतिकता, आत्मनिर्भरता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ती है। उनका विश्वास था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि जिम्मेदार, संवेदनशील एवं नैतिक नागरिक तैयार करना होना चाहिए। आज पर्यावरण शिक्षा, मूल्य शिक्षा, नागरिक उत्तरदायित्व, शांति शिक्षा तथा सतत विकास शिक्षा (Education for Sustainable Development) गांधीजी की इसी शिक्षा-दृष्टि को आगे बढ़ाती हैं।

- **सतत विकास लक्ष्य (SDGs) और गांधीवादी सर्वोदय का संबंध**

सन् 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 2030 तक प्राप्त किए जाने वाले 17 सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals–SDGs) घोषित किए गए। इन लक्ष्यों का उद्देश्य गरीबी उन्मूलन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, स्वच्छ जल, स्वच्छ ऊर्जा, सतत उत्पादन एवं उपभोग, जलवायु परिवर्तन की रोकथाम, शांति, न्याय तथा वैश्विक साझेदारी के माध्यम से समावेशी एवं सतत विकास सुनिश्चित करना है। यद्यपि इन लक्ष्यों का औपचारिक निर्धारण इक्कीसवीं शताब्दी में हुआ, परन्तु इनके मूल सिद्धांत महात्मा गांधी के सर्वोदय दर्शन में बहुत पहले से विद्यमान थे। गांधीजी ने विकास को केवल आर्थिक समृद्धि का माध्यम नहीं माना, बल्कि उसे मानव कल्याण, नैतिकता, सामाजिक न्याय तथा पर्यावरणीय संतुलन से जोड़ा। सर्वोदय का मूल उद्देश्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति का विकास सुनिश्चित करना है। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों का प्रमुख सिद्धांत **"Leaving No One Behind"** अर्थात किसी भी व्यक्ति को विकास प्रक्रिया से वंचित न रहने देना है। यह सिद्धांत गांधीजी के **अंत्योदय** दर्शन से पूर्णतः मेल खाता है। गांधीजी का मानना था कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति का मूल्यांकन उसके सबसे कमजोर एवं अंतिम व्यक्ति की स्थिति से किया जाना चाहिए।

गरीबी उन्मूलन (SDG-1) के संदर्भ में गांधीजी का ग्राम स्वराज, कुटीर उद्योग तथा स्थानीय रोजगार का विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनका विश्वास था कि यदि प्रत्येक गाँव आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बने, स्थानीय उत्पादन को प्रोत्साहन मिले तथा रोजगार के अवसर ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध हों, तो गरीबी एवं

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

बेरोजगारी में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा (SDG-4) के संदर्भ में गांधीजी की नई तालीम शिक्षा को केवल साक्षरता तक सीमित नहीं रखती, बल्कि व्यक्तित्व विकास, नैतिक मूल्यों, श्रम की प्रतिष्ठा तथा आत्मनिर्भरता पर बल देती है। इसी प्रकार लैंगिक समानता (SDG-5) के संदर्भ में गांधीजी ने महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन की प्रमुख शक्ति माना तथा उनके समान अधिकारों का समर्थन किया।

स्वच्छ जल (SDG-6), जलवायु परिवर्तन (SDG-13), स्थलीय पारिस्थितिकी (SDG-15) तथा उत्तरदायी उत्पादन एवं उपभोग (SDG-12) जैसे लक्ष्य गांधीजी के पर्यावरणीय चिंतन से सीधे जुड़े हुए हैं। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग, सीमित उपभोग, सादगीपूर्ण जीवन तथा प्रकृति के संरक्षण को मानव जीवन का अनिवार्य अंग माना। शांति, न्याय एवं सशक्त संस्थाएँ (SDG-16) गांधीजी के सत्य एवं अहिंसा के सिद्धांतों की आधुनिक अभिव्यक्ति हैं। उनके अनुसार किसी भी समाज का स्थायी विकास केवल न्याय, नैतिकता तथा अहिंसक सामाजिक व्यवस्था के माध्यम से ही संभव है।

स्पष्टतः सतत विकास लक्ष्य गांधीवादी सर्वोदय के सिद्धांतों का आधुनिक वैश्विक रूप प्रतीत होते हैं। यदि इन लक्ष्यों के क्रियान्वयन में गांधीजी के विचारों को व्यवहारिक आधार बनाया जाए, तो सतत विकास अधिक प्रभावी एवं मानवीय बन सकता है।

- **समकालीन भारत में गांधीवादी सर्वोदय की प्रासंगिकता**

वर्तमान भारत तीव्र आर्थिक विकास, शहरीकरण तथा तकनीकी प्रगति के दौर से गुजर रहा है। इसके साथ-साथ पर्यावरणीय संकट, बेरोजगारी, ग्रामीण पलायन, कृषि संकट, आर्थिक विषमता तथा सामाजिक असमानता जैसी समस्याएँ भी निरंतर बढ़ रही हैं। इन परिस्थितियों में गांधीवादी सर्वोदय की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। आत्मनिर्भर भारत अभियान, वोकल फॉर लोकल, प्राकृतिक कृषि, जैविक खेती, पंचायती राज व्यवस्था, महिला स्वयं सहायता समूह, जल संरक्षण अभियान तथा ग्रामीण उद्यमिता जैसे अनेक कार्यक्रम प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गांधीजी के विचारों से प्रेरित प्रतीत होते हैं। आज जब विश्व स्थानीय उत्पादन एवं स्थानीय अर्थव्यवस्था की ओर पुनः लौट रहा है, तब गांधीजी का स्वदेशी सिद्धांत अत्यंत व्यावहारिक सिद्ध हो रहा है।

जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने के लिए भारत नवीकरणीय ऊर्जा, हरित प्रौद्योगिकी, जल संरक्षण तथा कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने के प्रयास कर रहा है। इन प्रयासों को व्यापक सामाजिक समर्थन तभी प्राप्त होगा जब नागरिकों में सीमित उपभोग, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व तथा नैतिक जीवनशैली विकसित होगी। गांधीजी का सादगीपूर्ण जीवन-दर्शन इस दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करता है। भारत में आज भी ग्रामीण क्षेत्र बड़ी जनसंख्या का निवास स्थान हैं। यदि ग्राम स्वराज की भावना के अनुरूप स्थानीय रोजगार, कुटीर उद्योग, कृषि आधारित उद्योग, विकेंद्रीकृत प्रशासन तथा सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा दिया जाए, तो ग्रामीण विकास अधिक संतुलित एवं आत्मनिर्भर बन सकता है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

सामाजिक दृष्टि से भी गांधीवादी सर्वोदय अत्यंत प्रासंगिक है। आज भी जातीय भेदभाव, लैंगिक असमानता, आर्थिक विषमता तथा सामाजिक बहिष्करण जैसी समस्याएँ विभिन्न रूपों में विद्यमान हैं। सर्वोदय समान अवसर, सामाजिक न्याय, मानवीय गरिमा तथा सर्वजन कल्याण की अवधारणा प्रस्तुत करता है, जो समावेशी भारत के निर्माण में सहायक हो सकती है। कॉर्पोरेट क्षेत्र में भी गांधीजी का ट्रस्टीशिप सिद्धांत सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को मजबूत करता है। आज कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR), पर्यावरणीय, सामाजिक एवं प्रशासनिक (ESG) मानकों तथा उत्तरदायी व्यवसाय की अवधारणाएँ गांधीवादी नैतिक अर्थव्यवस्था की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

डिजिटल युग में भी गांधीजी की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालन तथा वैश्वीकरण के दौर में यदि विकास केवल लाभ आधारित होगा तो सामाजिक असमानताएँ और बढ़ सकती हैं। इसलिए तकनीकी विकास के साथ नैतिक उत्तरदायित्व, सामाजिक न्याय तथा पर्यावरणीय संतुलन को जोड़ना आवश्यक है, जिसकी स्पष्ट दिशा गांधीवादी सर्वोदय प्रदान करता है।

**निष्कर्ष**

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वर्तमान वैश्विक विकास मॉडल अनेक गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा है। आर्थिक वृद्धि के बावजूद पर्यावरणीय संकट, सामाजिक असमानता, बेरोजगारी, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन तथा नैतिक मूल्यों का ह्रास मानव सभ्यता के समक्ष गंभीर प्रश्न खड़े कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में केवल तकनीकी या आर्थिक समाधान पर्याप्त नहीं हैं, अपितु विकास को नैतिकता, सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व से जोड़ना अनिवार्य हो गया है।

महात्मा गांधी का सर्वोदय दर्शन ठीक इसी समग्र एवं मूल्य-आधारित दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, ग्राम स्वराज, ट्रस्टीशिप, आत्मनिर्भरता, सीमित उपभोग तथा सर्वजन कल्याण जैसे सिद्धांत आधुनिक सतत विकास के आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय तीनों आयामों को संतुलित एवं मजबूत आधार प्रदान करते हैं। सर्वोदय विकास को मात्र उत्पादन वृद्धि का माध्यम नहीं मानता, बल्कि मानव कल्याण, सामाजिक समरसता और प्रकृति संरक्षण का समुचित साधन मानता है।

संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) का गहन विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि इनके अधिकांश मूल सिद्धांत गांधीजी के विचारों में पहले से ही विद्यमान थे। गरीबी उन्मूलन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, जल संरक्षण, उत्तरदायी उपभोग, जलवायु परिवर्तन की रोकथाम तथा सामाजिक न्याय जैसे लक्ष्य सर्वोदय दर्शन के केन्द्रीय तत्व हैं।

वर्तमान भारत तथा सम्पूर्ण विश्व के लिए गांधीवादी सर्वोदय केवल ऐतिहासिक विरासत नहीं, बल्कि भविष्य के विकास की नैतिक एवं व्यावहारिक दिशा है। यदि नीति-निर्माण, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक विकास में गांधीवादी सिद्धांतों को उचित स्थान दिया जाए, तो एक अधिक न्यायपूर्ण,

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

समावेशी और सतत समाज की स्थापना संभव है। अतः यह कहा जा सकता है कि सतत विकास की चुनौतियों के समाधान में गांधीवादी सर्वोदय की प्रासंगिकता आज पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है।

**संदर्भ**

1. आर. के. प्रभु तथा यु. आर. राव, 'महात्मा गांधी के विचार', नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, पहला संस्करण, अक्तूबर 1994
2. एम. के. मिश्रा, और डॉ. कमल दाधीच, 'गांधी एंव सर्वोदयी', अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण, जनवरी 2011
3. कमल, के. एल., 'गांधी चिंतन', जयपुर पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2009
4. कुमारी सुनीता, 'गांधी दर्शन', एसोसिएट पब्लिशिंग हाउस, आगरा, 2019
5. राम सहाय, प्रकृति की गोद में, भारत प्रकाशन, मार्च 2019
6. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, 'महात्मा गांधी', जाइको पब्लिशिंग हाउस, मुंबई, 1957
7. सिंह रामजी, 'गांधी और भावी विश्व व्यवस्था', कॉमन वेल्थ पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2009
8. सिंह, रामजी, 'गांधी और मानवता का भविष्य', कॉमन वेल्थ पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2009